International Journal of Multidisciplinary Trends

**E-ISSN:** 2709-9369
**P-ISSN:** 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2024; 6(3): 01-05
Received: 06-12-2023
Accepted: 09-01-2024

**डॉ. विनोद यादव**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजकीय महाविद्यालय, मंगरौरा, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. विनोद यादव**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजकीय महाविद्यालय, मंगरौरा, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

# विन्ध्य क्षेत्र में निवासरत आदिम जनजातियों का परिचय

## डॉ. विनोद यादव

**सारांश**
विन्ध्य क्षेत्र में आज से हजारों वर्ष पहले विभिन्न प्रजातियों के लोग रहते थे। इनकी भाषा व रीति–रिवाज भी भिन्न प्रकार के थे। वे विभिन्न उद्यमों द्वारा अपना जीवन–यापन करते थे। वे विभिन्न कलाओं में अपनी रूचि को प्रदर्शित कर एक दुर्लभ संस्कृति का निर्माण कर रहे थे। वर्तमान समय में भी यहाँ पर विभिन्न संस्कृतियों के लोग निवास कर रहे हैं, परन्तु उनके जीवन स्तर में असमानता नजर आती है। इस क्षेत्र में जहाँ एक ओर आदिम संस्कृति के लोग निवास कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक विकसित संस्कृति के लोग भी निवास कर रहे हैं। इस क्षेत्र की इस विशेषता ने यहाँ के मानव संसाधन की संभावनाओं को काफी हद तक प्रभावित किया है। वर्तमान समय में यहाँ पर विभिन्न धर्म व जाति के लोग निवास कर रहे हैं, जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तथा विभिन्न जनजातियों को शामिल किया जा सकता है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र पर काफी लम्बे समय तक जनजातियों का ही आधिपत्य रहा है।

**कुटशब्दः** गोंड, कोल, अगरिया, बैगा, मुसहर।

**प्रस्तावना**
विन्ध्य क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों में जनजातीय समूह के लोग ही यहाँ के प्राचीन तथा मूल निवासी हैं। इन आदिवासी समूह के लोगों की अपनी एक सांस्कृतिक विशेषता रही है, जो लम्बे समय से परम्परागत रूप से चली आ रही है। इनके सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास का स्तर अलग–अलग है। इसी प्रकार उनके रीति–रिवाज तथा परम्परायें, भाषा तथा धर्म, विश्वास एवं मान्यताएँ भी अलग–अलग हैं। परन्तु धीरे–धीरे ये लोग सरकारी प्रयासों तथा स्वयंसेवी समूहों की सहायता से समाज की मुख्य धारा से जुड़ रहें हैं। इस क्षेत्र में अनेक जनजातियाँ पायी जाती है, जिनमें गोंड, कोल, चेर, मझवार, खरवार, अगरिया, पथरी, बयान, पनिका, परहिया, मुसहर, कवर, बैंगा आदि प्रमुख जनजातियाँ तथा अन्य छोटी जनजातियाँ उल्लेखनीय हैं।[1] चूंकि ये जनजातियाँ इस क्षेत्र में काफी लम्बे समय से निवास करती चली आ रही हैं, अतः इनके अध्ययन से अनेक ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या में सहायता मिलेगी।[2] इस क्षेत्र में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियों का परिचय निम्नवत् है –

**गोंड**
विन्ध्य क्षेत्र में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियों में गोंड जनजाति का महत्वपूर्ण स्थान है। संख्या की दृष्टि से भी इनकी संख्या अधिक है। यह जनजाति इस क्षेत्र में 15वीं से 18वीं शताब्दी तक शासक की भूमिका में थी, परन्तु वर्तमान समय में इनकी पहचान एक मूल जनजाति के रूप में नहीं रह गयी है। आज ये विकास की मुख्य धारा से जुड़कर अनेक विकासशील व्यावसायिक जातियों में बँट गए हैं, जिनमें अगरिया, ओझा, प्रधान, सोतहा, मुदिया, धीवर, नगारची आदि प्रमुख हैं। मझवार और खरवार जो गोड़ जनजाति की ही शाखा से सम्बन्धित हैं, आज भी बहुत कुछ जनजातीय लक्षणों वाली जीवन–शैली से युक्त हैं।
प्रारम्भ में गोंड जनजाति के लोग शिकार तथा मछली पकड़कर अपनी आजीविका चलाते थे, लेकिन वर्तमान में ज्यादातर गोंड या तो किसान के रूप में या खेतिहर मजदूर के रूप में खेती में संलग्न दिखाई देते हैं। कुछ क्षेत्रों में ये लोग झूमिंग कृषि करते हैं, जिनमें धरिया तथा धीवर विशेषतया परिगणित हैं। पारिस्थितिकीय कारणों तथा सांस्कृतिक संपर्क और संसाधनों के कारण गोंडो का समाज मूलतः स्थानीय गोत्रों पर आधारित है, जो मुख्यतया दो बहिर्जात विवाह सम्बन्धों में बँटा हुआ है। गोंड जनजाति के कुल सात गोत्रों का पता लगाया गया है, जिनमें पराती, कुलदाही, वसुला, बास, कुसिया, खुसी और देवरासी है।[3] गोडों के सामाजिक संगठन के मुख्यतः दो आधार दिखाई पड़ते हैं। इनमें पहला क्षेत्रीय आधार पर केंद्रित है तथा दूसरा वंश परम्परा पर आधारित है। क्षेत्रीय आधार पर यदि अध्ययन किया जाए तो यह पता चलता है कि कुछ क्षेत्रों के गोंड धीरे–धीरे विकसित तथा परिमार्जित जीवन शैली की ओर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।[4]
गोंड जनजाति की प्रजाति को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक लोक–कथाएं प्रचलित हैं।

इस जनजाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में नृतत्वशास्त्रियों के मत भी अलग–अलग हैं। हरबर्ट रिजले के अनुसार द्रविड़ों को छोड़कर भारत में निवास करने वाली सभी जातियाँ बाहर से आयी हैं। गोंड प्रोटो–आस्ट्रेलायड प्रजाति से सम्बन्धित हैं, जिनका भारत में आगमन बाहर से हुआ है।[5] बी0 एस0 गुहा[6] तथा डी0एन0 मजूमदार[7] आदि विद्वान रिजले महोदय के मत से सहमत नहीं हैं। इन विद्वानों के अनुसार भारत की सभी प्रजातियाँ जिनमें द्रविड़ प्रजाति भी शामिल है, का आगमन बाहर से ही हुआ है। गोंड जनजाति में कुछ लोग गोमांस खाते हैं, सुअरों की बलि चढ़ाते हैं तथा मदिरा आदि का सेवन भी करते हैं। इनके प्रमुख देवताओं में बड़ादेव, ठाकुरदेव, नारायणदेव आदि हैं। इनके प्रमुख त्योहारों में विदरी, बकबन्धी, हारधिल्ली, जवरामदाई तथा चेचेराता प्रमुख हैं। गोंड़ जनजाति के लोग कर्मा, शैला, भदौनी, सजनी और बिरहा आदि नृत्यों का भी आनन्द उठाते हैं।

## कोल

यह विन्ध्य क्षेत्र की दूसरी प्रमुख जनजाति है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली कोल जनजाति के लोग अपना सम्बन्ध नान्हू नामक अपने किसी पूर्वज से जोड़ते हैं। किवदंतियों से पता चलता है कि अन्य जनजातियों की तरह गंगाघाटी में इनका भी साम्राज्य था, परन्तु वे सबरा तथा सेवरी के द्वारा वहाँ से भगा दिए गए और दक्षिण के पहाड़ी भाग को उन्होंने अपना निवास स्थान बना लिया। इस क्षेत्र में कुछ स्थानों के नाम कोल जनजाति के नाम के आधार पर हैं, जैसे–वाराणसी जिले का एक परगना आज भी कोल असलहा के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ को पहले कोलामा नाम से जाना जाता था। कोल लोग बंगाल के मुंदरी या मुण्डा जनजाति से सम्बन्ध रखते हैं। गोंडो की तरह इनकी उत्पत्ति के बारें में भी निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। इस जनजातीय समूह के लोगों के रीति–रिवाज पूर्णतः हिन्दू संस्कृति से सम्बन्धित रीतियों से मिलते–जुलते हैं। कोल गोत्र परम्परा में विश्वास रखते हैं, जिनके गोत्रों की संख्या सात हैं। सम्प्रति इन्होंने अब खगोलीय विवाह से सम्बन्धित परम्परा को अपना लिया है। कोल जनजाति के लोग अपने को शबरी का वंशज मानते हैं। कोलों की अनेक उपजातियाँ हैं जिनमें रोहिना, रेतुआ, खैगार तथा रोथैल प्रमुख हैं।[8]

कोल जनजाति के लोग विभिन्न प्रतीकों, आत्माओं तथा पूर्वजों की पूजा करते हैं, क्योंकि ये लोग उनसे विशेष रूप से डरते हैं। ये भूत–प्रेत आदि में विश्वास करते हैं। इनके प्रमुख देवता राजा लखन हैं। प्रायः ऐसा माना जाता है कि ये गाँव के एक बरगद के वृक्ष पर निवास करते हैं और घर का मुखिया इनके सम्मान में बरगद रूपी देवस्थान के पास एक भेड़ा तथा एक बोतल शराब चढ़ाता है। इसके अतिरिक्त ये लोग अन्य अनेक देवी–देवताओं की पूजा करते हैं, जिनमें रसेल तथा फूलमती माता, बघदत, बासमती माता, चिथरिया वीर आदि प्रमुख हैं। इनके यहाँ नागपूजा का भी विधान है जो नागपंचमी के त्योहार से जुड़ा प्रतीत होता है। हिन्दुओं की तरह दशहरा, दीपावली, होली, रामनवमी इनके भी प्रमुख त्यौहार हैं। भगत, दहको, बुन्देली, जिंतला आदि कोलों के प्रमुख गीत हैं। कोल जनजाति के अन्य प्रमुख देवताओं में बरमदेव, अगियाबैताल, सन्यासीदेव, डेनदेव, करतारदेव भी उल्लेखनीय हैं।

कोल जनजाति में बहुत कम लोगों के पास स्वयं की कृषि भूमि है। अधिकतर कोल दूसरों के यहाँ हलवाही का काम करके अपना जीविकोपार्जन करते हैं। इनमें से कुछ लोग आज भी झूमिंग खेती करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं। कोलों के यहाँ विभिन्न आडम्बर एवं मान्यताएं आज भी प्रचलन में हैं।

## चेर

विन्ध्य क्षेत्र में निवास करने वाले चेर कोल जनजाति की ही एक शाखा हैं। चेर लोग द्रविड़ प्रजाति से सम्बन्धित हैं। ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेजों द्वारा विस्थापित करने से पूर्व चेरों ने एक विस्तृत भू–भाग पर अपनी शासन–सत्ता कायम कर रखी थी। वर्तमान में चेर कृषि तथा मजदूरी में संलग्न दिखाई देते हैं। इनकी कद–काठी में भिन्नता दिखाई पड़ती हैं। इनके चेहरों पर उभरी हुई हड्डियाँ पायी जाती हैं, इनकी आँखें छोटी, नाक चौड़ी तथा नीचे की ओर झुकी हुई मोटे होठों से युक्त चौड़ा मुख इनकी प्रमुख शारीरिक विशेषता है। इनका शरीर अधिकांशतः हल्के भूरे रंग का होता है। चेर लोगों को मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिलों में बैगा कहा जाता है। सोन के उत्तर में चेरों के प्रमुख देवता घनश्याम देव हैं, लेकिन सोनपार में खासकर दूधी घाटी में ये अपने पूर्वजों की पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य स्थानीय देवताओं में राजा चन्देल तथा बरियारशाह प्रमुख हैं।

## मझवार

मझवार जनजाति को माझी, मझवार तथा गोंड मझवार आदि नामों से भी जाना जाता है। इस जनजाति के लोग गोंड जनजाति से साम्य रखते हैं। मझवार लोग चौड़े सिर तथा चौड़ी नाक वाले होते हैं। ये लोग अधिकतर विन्ध्य क्षेत्र के पश्चिमी भाग में निवास करते थे। अपने मूल स्थान से अपना सम्बन्ध बनाए रखने के लिए वे विलासपुर जिले में स्थित सारंगढ़ और मरूआगढ़ अथवा मरू में स्थित देवस्थान की समय–समय पर धार्मिक यात्रा करते हैं। ये लोग गोंडों के देवता बड़ादेव तथा उनके सहायक बघियादेव की पूजा करते हैं और उनके अनुसार इन देवताओं से सम्बंधित मंदिर तथा मूर्तियाँ उनके देवस्थान में मौजूद हैं। विन्ध्य क्षेत्र में ऐसी मान्यता है कि बड़ादेव प्रत्येक गाँव के देवस्थल जिसे 'देवहार' कहा जाता है, में निवास करते हैं। बड़ादेव का निवास पुराने साल के वृक्ष पर भी माना जाता है।

इस जनजाति की पाँच उपजातियाँ पायी जाती हैं– पोइया, हेकन, मड़ई, ओइका और ओल्कू आदि। इनमें भूत–प्रेत और झाड़–फूँक जैसे अन्धविश्वास खूब प्रचलित हैं। इनकी ऐसी मान्यता है कि सभी प्रकार की बीमारियाँ इन्हीं भूतों के कारण होती हैं। फिर भी ये सभी भूतों की पूजा नहीं करते हैं। मझवार लोगों में भूतों को लेकर अनेक रोचक कहानियाँ प्रचलित हैं। इस जनजाति के लोग कोरवा तथा अन्य जनजातियों की तरह करमवृक्ष को आदर की दृष्टि से देखते हैं। करमवृक्ष से सम्बन्धित एक नृत्य भी इनके बीच प्रचलन में है।

## खरवार

खरवार जनजाति का नामकरण स्थानीय आधार पर किया गया लगता है। इस जनजाति के लोग खावी नामक वृक्ष से कत्था निकालने का काम करते हैं। अतः खावी नामक वृक्ष से सम्बन्धित होने के कारण इनको खरवार कहा गया होगा। इस जनजाति के लोग अपना मूल स्थान रोहतास को बताते हैं तथा राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व से अपना सम्बन्ध बताते हुए अपने को सूर्यवंशी क्षत्रिय कहते हैं। परन्तु कुछ लोग राजा बेन से अपना इतिहास जोड़ते हैं और अपने को बेनवंशीय क्षत्रिय कहते हैं। विन्ध्य क्षेत्र की सभी जनजातियों में खरवार लोग ही हिन्दू धर्म तथा संस्कृति के अधिक करीब दिखाई पड़ते हैं। ये लोग कोरवा जनजति से भी साम्य रखते हैं। खरवार लोग गोल चेहरे, काले तथा खड़े बाल और पतले नाक व होंठ वाले होते हैं। इनका सीना सँकरा, पेट लम्बा और पसलियाँ भी लम्बी होती हैं।[9] ये लोग एक विस्तृत टोटेमिक गोत्रीय संगठन व्यवस्था के अन्तर्गत संगठित दिखाई पड़ते हैं। परन्तु विभिन्न भागों में इनका आन्तरिक संगठन अलग–अलग दिखाई पड़ता है।

इस जनजाति के लोग स्वयं को हिन्दू कहते हैं। परन्तु ये हिन्दू धर्म से सम्बंधित देवी–देवताओं की पूजा नहीं करते हैं। खरवार लोग केवल हिन्दू धर्म में प्रचलित सूर्य नमस्कार को ही अपनाये

हुए हैं। सूर्य का इनके जीवन में विशेष स्थान है। इनके प्रमुख देवी–देवताओं में ज्वालामुखी देवी तथा राजा लखन प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त महादेव, राजा चन्दोल और धरतीमाता जैसे इनके कुछ स्थानीय देवता भी हैं। कालान्तर में धीरे–धीरे इन लोगों ने कुछ हिन्दू देवी–देवताओं को भी अपना लिया है। हिन्दुओं में प्रचलित श्राद्ध–परम्परा का भी इनके सामाजिक–धार्मिक जीवन में विशेष स्थान है।

**अगरिया**

अगरिया समुदाय के लोग उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले तथा मध्य प्रदेश के रीवा व सीधी जिले में निवास करते हैं। ये लोग प्रायः लोहे से सम्बंधित व्यवसाय में लगे हुए हैं। ऐसा माना जाता है कि ये लोग भी द्रविड़ प्रजाति से ही सम्बंधित हैं। ये काफी मजबूत कद–काठी के लोग हैं। इसका कारण यह है कि ये लोग काफी शारीरिक मेहनत करते हैं। इनका मूल निवास स्थान मध्य प्रदेश के रीवा जिले में स्थित रजौरा नामक स्थान को माना जाता है। ये लोग लोसर देवी तथा अपने ग्राम देवता की पूजा वर्ष के हिन्दी महीने अगहन तथा पूस मास में करते हैं। अगरिया जनजति के लोग इस क्षेत्र में काफी लम्बे समय से निवास करते चले आ रहें हैं।

**चित्र 1:** लोहे का काम करते हुए अगरिया जनजाति

**पथरी**

पथरी मझवार जनजाति की ही एक शाखा है। मझवार लोग पथरी जनजति के सगोत्रीय लोगों से पुजारी का काम लेते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप पथरी जनजाति की निर्माणक–इकाईयाँ एक लम्बे क्षेत्र में फैली हुई हैं और उन्हें समय–समय पर लम्बी यात्राएं भी करनी पड़ती है। पथरी लोगों के पुजारी होते हुए भी समाज में उनकी स्थिति नीची समझी जाती है। मझवार लोग न तो पथरियों के साथ भोजन ग्रहण करते हैं और न ही उनका छुआ पानी ही पीते हैं। सामान्यतः पथरी लोग मरे हुए व्यक्तियों से सम्बन्धित कपड़े आदि ग्रहण करते हैं, इसलिए समाज में उनको हेय दृष्टि से देखा जाता है। इस प्रकार पथरी जनजाति के लोग एक प्रकार से भिखारियों की तरह जीवन यापन करते हैं।

**बयार**

बयार जनजाति के लोग प्रायः किसान तथा मजदूर के रूप में अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इनका प्रमुख काम धान की खेती करना तथा तालाब और बड़े–बड़े बाँधों का निर्माण करना है। यह जनजाति स्थानीय होते हुए भी बहुत ज्यादा संक्रमित है। हरिजन जाति से इनको भिन्न करना कठिन है, क्योंकि ये लोग इनके चतुर्दिक फैले हुए हैं। बयार लोग अपना मूल स्थान बड़हल परगना को मानते हैं। इनका रंग हल्का काला होता है। बयार लोग अत्यंत शांति प्रिय तरीके से अपना जीवन यापन करते हैं। इनके प्रमुख देवता महादेव हैं, जिनकी ये लिंगम नाम से पूजा करते हैं।

**पनिका**

यह जनजाति वर्तमान सोनभद्र जिले में निवास करती है। ये लोग प्रायः बुनाई तथा चौकीदारी का काम करते हैं। पंका अथवा कोटवार आदि इनके भिन्न नाम हैं। कोटवार का अर्थ किले की रक्षा करने वाला होता है। पनिका जनजाति को देखकर यह आभास होता है कि ये लोग द्रविड़ प्रजाति से सम्बंधित हैं। इनके सामाजिक जीवन में हिन्दुत्व के कुछ लक्षण दिखाई पड़ते हैं। इनके त्योहारों में होली तथा विजयादशमी प्रमुख हैं। परन्तु ये इन त्योहारों को अपने ढंग से मनाते हैं। भूत–प्रेत आदि में ये लोग विश्वास करते हैं। ये अपने प्रमुख देवता के रूप में दूल्हादेव की पूजा करते हैं। दूल्हादेव को विवाह का देवता माना जाता है।

**बैसवार**

बैसवार अपने को धुन्दियाखेरा के प्रसिद्ध बैस खानदान का राजपूत मानते हैं। परन्तु इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक विवाद है। वर्तमान में इनका बैसवारा से कोई सम्बन्ध नहीं हैं। इनमें सगोत्रीय विवाह पद्धति प्रचलित है। ये लोग काले रंग के दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार इनके राजपूत होने की बात संदेहास्पद लगती है। ये लोग उच्च हिन्दू जातियों की तरह समाज में अपना स्थान रखते हैं। बैसवार ज्यादातर भूमि के मालिक हैं अथवा बटाई पर लम्बी खेती कराते हैं। ये लोग अपने स्थानीय देवता की पूजा बैगा के माध्यम से सम्पन्न कराते हैं। परन्तु देवी की पूजा ब्राह्मण के द्वारा सम्पन्न कराते हैं।

**भुइया**

भुइया मूलतः द्रविड़ प्रजाति की जनजाति है। इनका मानना है कि इनकी उत्पत्ति ऋषि भाद तथा महेश और महेश के पुत्रों से हुई है। इसी कारण ये अपने को ऋषासन भुइया कहते हैं। ये अपने को हिन्दू मानते हैं तथा हिन्दू देवी काली के साथ अन्य स्थानीय देवियों की पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त ये ग्राम देवता व धरतीमाता की उपासना बैगा के माध्यम से करते हैं। इनके बीच एक महत्वपूर्ण जनजातीय नायक की मान्यता है जिसे ये 'नादूवीर' के नाम से पुकारते हैं।[10] ज्यादातर भुइया लोग खैर बनाने के काम में भी लगे हैं। खैर बनाने का काम करने के कारण भुइया को खैरहा भी कहा जाता है।

**धनगर**

विन्ध्य क्षेत्र में धनगर जनजाति की संख्या अपेक्षाकृत कम दिखाई पड़ती है। ऐसी मान्यता है कि इस जनजाति के लोग आज से लगभग 300 वर्ष पहले दक्षिण में स्थित बरवै नामक स्थान से चलकर विन्ध्य क्षेत्र में आये। ये लोग 'जूरा' तथा 'बुद्धू–भगत' को अपना नायक मानते हैं। ये लोग अपने को हिन्दू कहते हैं तथा आंशिक रूप से हिन्दू देवी–देवताओं की पूजा करते हैं। इनके प्रमुख देवी–देवताओं में 'बरना भवानी' तथा 'गौरइयादेव' विशेष प्रसिद्ध हैं। ये लोग गाँव के देवसमूह के साथ 'देवहार' के प्रति भी सम्मान व्यक्त करते हैं। धनगर लोग अधिकतर हलवाहे के रूप में काम करते हैं, परन्तु इनकी स्थिति मजदूरी करने वाली अन्य जनजातियों से अच्छी है।

**पहरी**

पहरी जनजाति मिर्जापुर जिले की चुनार तहसील में पायी जाती है। पहरी जनजाति को मुख्यतः डोम अथवा दुसाध जनजाति से सम्बद्ध किया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पहरी जनजाति कोई भिन्न जनजाति न होकर इन्हीं की एक शाखा है।

**भुइयार**

विन्ध्य क्षेत्र के दक्षिणी पहाड़ी भागों में पायी जाने वाली भुइयार जनजाति द्रविड़ प्रजाति से सम्बंधित है। इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में जानकारी बहुत ही कम है। भुइयार अपना सम्बन्ध भउनरादह से जोड़ते हैं। भउनरादह सुदूर दक्षिण में कहीं स्थित है। भुइयार धइया तरीके से खेती करते हैं, जिसका स्थानीय नाम 'बेवनरा' है। इसी कारण इन्हें 'वेनरिहा' भी कहा जाता है। ये अपने को हिन्दू कहते हैं। भुइयार जनजातीय देवता 'देवसिवनरिया' की पूजा करते हैं, इसे गाँव की सीमा का देवता माना जाता हैं। कुछ लोग धरतीमाता तथा महादेव की भी पूजा करते हैं। इनके देवताओं का कोई स्थायी मंदिर नहीं है और न ही वे अपनी पूजा में पुजारियों की सहायता लेते हैं। इनका जीवन अन्य जनजातियों की अपेक्षा अधिक जंगली है। ये आज भी धनुष–बाण चलाने में काफी प्रवीण है। इनका जीवन वनों और उनसे प्राप्त उत्पादों पर ही आश्रित है।

**कोरवा**

कोरवा जनजाति सोनभद्र जिले के दुद्धी परगना में निवास करती है। सोनभद्र का यह भाग सरगुजा (छत्तीसगढ़) की सीमा से लगा हुआ है। कोरवा लोगों का मानना है कि सरगुजा इनका मूल निवास स्थान था, वहीं से वे अन्य जगहों पर जाकर बसे। ये अपनी धार्मिक क्रिया–कलापों के लिए अपने मूल स्थान से ही पुजारियों को बुलाते हैं। इनकी उत्पत्ति विषयक मान्यताओं से ज्ञात होता है कि इनका सम्बन्ध कुर से है तथा इनका मूल निवास स्थान बेवर में महादेव की पहड़ियों से कहीं रहा होगा। ये हिन्दू धर्म तथा रीति–रिवाज से बिल्कुल अलग हैं। इनके जनजातीय देवता राजा चन्देल है, जिनकी पूजा ये लोग हिन्दी के फाल्गुन महीने में करते हैं। कोरवा भूत–प्रेत में विश्वास करते हैं तथा उनका निराकरण बैगा के माध्यम से कराते हैं।

**घसिया**

विन्ध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में निवास करने वाली घसिया जनजाति द्रविड़ प्रजाति से सम्बंधित है। इसकी उत्पत्ति के संदर्भ में जानकारी उपलब्ध नहीं है, फिर भी किंवदन्तियों से पता चलता है कि घसिया, कोल, भुइयार तथा संथाल एक ही वंश वृक्ष से सम्बंधित हैं। घसिया अपने को हिन्दू मानते हैं, परन्तु ये महादेव के अतिरिक्त जनजातीय देवताओं सीवान, दूल्हादेव तथा छतबहा की भी पूजा करते हैं। भूत–प्रेत आदि में ये विश्वास करते हैं तथा अपनी धार्मिक क्रियाओं से सम्बंधित कार्य बैगा के माध्यम से सम्पन्न कराते हैं। इनका सामाजिक स्तर अत्यंत निम्न है। ये मजदूरी आदि करके जीवनयापन करते हैं।

**परहिया**

परहिया अपना मूल निवास स्थान झाँसी तथा सरगुजा को बताते हैं। परन्तु कालान्तर में इनका प्रवास अन्य क्षेत्रों में हुआ और यह प्रक्रिया अब भी जारी है। परहिया द्रविड़ प्रजाति की जनजाति है। देखने में यह लोग जंगली तथा अत्यधिक पिछड़े हुए लगते हैं। इनके शरीर की औसत लम्बाई 5 फीट 3 इंच के करीब होती है। ये जंगलों से लकड़ी काटकर उसे बेचते हैं, जिससे इनकी आजीविका चलती है। इसके अतिरिक्त ये लाख जैसे जंगली उत्पादों को बेचकर अपने जीवन–यापन हेतु आवश्यक खाद्य सामग्री प्राप्त करते हैं। परहिया लोग एक छोटा सा जनजातीय संगठन बनाकर पहाड़ियों आदि पर झोपड़ियों में निवास करते हैं।

**मुसहर**

मुसहर जनजाति विन्ध्य क्षेत्र के उत्तरी भाग में निवास करती है। इस जनजाति का मुख्य पेशा जंगलों से पत्तों को इकट्ठा कर पत्तल या दोना बनाना है। इसके अलावा जंगलों से लकड़ी काटकर बेचना तथा अन्य जंगली उत्पादों को इकट्ठा कर बेचना इनके परम्परागत कार्य हैं। वर्तमान में कुछ लोग कृषि में हलवाहे के रूप में भी काम करने लगे हैं।

**कवर**

कवर जनजाति प्रायः मानव बस्ती से दूर पहाड़ियों तथा नदियों के किनारे रहना पसन्द करती है। इनका जीवन आज भी धनुष–बाण पर आश्रित है। शिकार करना इनका प्रमुख व्यवसाय है। इनकी आजीविका के अन्य साधनों में झूमिंग कृषि, जंगली जड़ी–बूटियाँ, फल, लकड़ी तथा बाँस इकट्ठा करना और मछली पकड़ना आदि है। इसके अलावा ये बांस की टोकरियाँ, सूपा, खुमानी, मोरी, चोटिया, झियरी, झाँपी, सेरहा, कबरी और चटाई बनाने का कार्य भी करते हैं। कवर जनजाति अनेक देवी–देवताओं की पूजा करती है। प्रत्येक गाँव में माता जी से सम्बंधित देवस्थान होता है, जहाँ गाँव के सभी लोग पूजा किया करते हैं। इनसे सम्बंधित कुछ गांवों में दूल्हादेव की पूजा की जाती है तथा कुछ जगह बुद्धाराजा, बुद्धमाई, मातामाई आदि की भी पूजा होती है।

**बैगा**

विन्ध्य क्षेत्र में निवास करने वाली बैगा जनजाति इस क्षेत्र की सबसे आदिम जनजातियों में से एक है। यह द्रविड़ प्रजाति की जनजाति है। बैगा गोंड जनजाति के यहाँ पुरोहित का कार्य करते हैं। इस प्रकार इनका गोंड जनजाति के यहाँ काफी सम्मान है। किंवदन्तियों के अनुसार बैगा तथा गोंड एक ही पूर्वज के वंशज हैं। बैगा जनजाति को भूमिया जनजाति की ही एक शाखा स्वीकार किया जाता है। आर0 एल0 रसेल तथा हीरालाल महोदय के अनुसार बैगा जनजाति की सात उपजातियाँ है।[11] ये सात उपजातियाँ निम्न हैं– विंझिवार, भरतिया, हरसन, नाहर, कथभैना, कोंदवरा तथा गोंदवसना। बैगा जनजाति के लोग काले, ठिगने कद के तथा चपटी नाक वाले होते हैं। इस जनजाति के पुरूष देवता घमासान देव हैं। इसके अतिरिक्त ये खैरमाई, रातमाई, बाघेश्वरदेव तथा नारायणदेव की भी पूजा करते हैं। बैगा लोग टोने–टोटके तथा भूत–प्रेत आदि में विश्वास रखते हैं। यह लोग अपने देवताओं को खुश करने के लिए बकरे, सुअर तथ मुर्गे की बलि भी चढ़ाते हैं।

बैगा जनजाति के लोग बिदरी, हरेली, होली, दशहरा एवं दीपावली आदि त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। कर्मा इनका प्रिय जनजातीय नृत्य है जिसमें स्त्री–पुरूष दोनों अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। बैगा जन्मजात शिकारी जनजाति है। इनके द्वारा शिकार आदि में प्रयुक्त हथियारों में खन्ता, चवरा, बरझा आदि प्रमुख हैं। धनुष–बाण का प्रयोग ये छोटे शिकार को प्राप्त करने के लिए करते हैं। इस जनजाति के लोग साहसी तथा निर्भीक होते हैं, परन्तु अजनबियों के साथ असहज महसूस करते हैं। इनका जीवन अधिकतर शिकार पर ही निर्भर है। ये जंगल में पाये जाने वाले सभी पशु–पक्षियों का मांस खाते हैं। इसके अतिरिक्त ये अपने भोजन में ज्वार, मक्का, कोदो, कुटकी तथा बथुए के बीज से बनी रोटी को भी शामिल करते हैं।

**निष्कर्ष**

विन्ध्य क्षेत्र में निवास करने वाली जनजातियों के धर्म में हमें ब्रह्मवादी विचारधारा के लक्षण दिखाई देते हैं। साथ ही इनके धर्म में विविधता के भी दर्शन होत हैं, जिसमें देवता सभी प्रकार की बीमारियों, भूत–प्रेत, प्रकृति, मृत पूर्वजों, टोटकें, ताबीज और विभिन्न विस्मयों आदि से भली प्रकार जुड़ा रहता है। समस्त जनजाति के लोग अपने ग्राम–देवताओं के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं, जिन्हें 'देवहार' कहा गया है। इसके अतिरिक्त इनके बीच ओझा और बैगा का विशेष सम्मान है। इनका प्रमुख कार्य

भूत–प्रेतादि से लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए झाड़–फूँक और कर्मकाण्ड करना है। विन्ध्य क्षेत्र में निवासरत जनजातियाँ, जो हिन्दू धर्म के निकट आ रही हैं, उनके प्रमुख देवता घनश्याम देव तथा राजा लखन हैं। इन देवताओं का देवस्थल मिट्टी से बने एक चबूतरे से सम्बन्धित होता है। इस चबूतरे पर मिट्टी से बना कटोरे जैसा छोटा बर्तन रखा जाता है। इन कटोरों का उपयोग देवताओं की पूजा के लिए किया जाता है। इनमें देवताओं को चढ़ावे के लिए जल भरा जाता है। इसके अतिरिक्त देवस्थल पर तवे पर बनी मोटी रोटी तथा दूध चढ़ाया जाता है। सोन के दक्षिण में देवस्थल का निर्माण किसी धारा के समीप कुछ बोल्डरों को रखकर किया जाता है। यद्यपि यह निर्माण साधारण कोटि का होता है। देवस्थल किसी वृक्ष के नीचे बनाए जाने की परम्परा है। इन देवस्थलों में कोई मूर्ति इत्यादि नहीं पायी जाती है। गंगा के दक्षिण देहाती क्षेत्रों में निवासरत सभी जनजातीय देवस्थलों पर लोहे से निर्मित एक चेन पायी जाती है जिसमें लोहे की एक पट्टी लटकती रहती है। ऐसा माना जाता है कि देवता इस पवित्र चेन से निरन्तर जुड़े रहते हैं। बैगा नामक पुजारी लोग इस चेन का उपयोग झाड़–फूँक आदि कार्यों हेतु बड़ी तन्मयता से करते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से अध्ययन क्षेत्र में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियों के जीवन, रीति–रिवाज, परम्पराओं व धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

## सन्दर्भ


1. सोशियो–इकोनॉमिक कन्डीशन्स ऑफ प्रीमिटिव ट्राइब्स इन मध्य–प्रदेश, एन.सी.ई.ए.आर., 1963, नई दिल्ली, पृ. 9–15।
2. अन्सारी, शाहिद, 2005, इथनोआर्कियोलॉजी ऑफ प्रीहिस्टारिक सेटलमेण्ट पैटर्न ऑफ साउथ–सेण्ट्रल गंगा वैली, इण्डियन सोसाइटी फॉर प्रीहिस्टारिक एण्ड क्वाटर्नरी स्टडीज, पृ. 14–65.
3. क्रुक, डब्ल्यू, 1896, द ट्राइब्स एण्ड कास्ट ऑफ द नार्थ वेस्टर्न इंडिया एण्ड अवध प्रोवियन्स, आफिस ऑफ द सुपरिन्टेण्डेन्ट ऑफ गवर्नमेण्ट प्रिंटिंग, वॉल्यूम 1–2, कोलकाता.
4. फुच्स, स्टेफेन, 1960, द गोंड एण्ड भूमिया ऑफ ईस्टर्न मण्डला, लन्दन, पृ. 138.
5. हट्टन, जे.एच., 1961, कास्ट इन इण्डिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन.
6. गुहा, बी.एस., 1944, रेशियल इलीमेंट्स इन इण्डियन पॉपुलेशन, बाम्बे, पृ. 342.
7. मजूमदार, डी.एन., 1958, रेसेज एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे.
8. हुसैन, आमिर, 1972, द कोल ऑफ पाथ, इलाहाबाद.
9. कलकत्ता रिव्यू, स्प्ए पृ. 356.
10. क्रुक, 1896, पूर्वोक्त, वॉल्यूम–2, पृ. 81.
11. रसेल आर.वी. एण्ड हीरा लाल, 1916, द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ द सेन्ट्रल प्राविंसेस ऑफ इण्डिया, मैकमिलन, वॉल्यूम–3, लन्दन, पृ. 42.